राजनीतिक दलों के व्यक्तियों का विश्लेषण

–सुधीर कुमार राय एवं शिवांगी त्रिवेदी*
असि. प्रोफेसर–मनोविज्ञान, साकेत महाविद्यालय, अयोध्या
*शोध छात्रा–मनोविज्ञान, डॉ.रा.म.लो. अवध वि.वि. अयोध्या

राजनीति ,मनोविज्ञान में एक नया क्षेत्र है। हमारे देश में इस क्षेत्र में बहुत कम शोध कार्य हुए हैं, जो शोध उपलब्ध हैं। उनमें से कुछ वोटिंग व्यवहार से हैं। राजनीतिक मनोविज्ञान के अन्य क्षेत्र अछूते हैं, पकोई शोध कार्य न तो हमारे देश में और न ही विदेशों में राजनीतिक व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विश्लेषण पर किए गए थे। राजनीतिक व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए, मनोवृत्ति की, मतदान व्यवहार, दृष्टिकोण आदि का अध्ययन प्रासंगिक है, आधुनिक समय में सभी समस्याएं राजनीतिक रूप लेती हैं, भले ही यह सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक हो। इस प्रकार, राजनीतिक दलों के व्यक्तियों का व्यक्तित्व विश्लेषण आवश्यक है।

परिचय

राजनीति एक सार्वभौमिक गतिविधि है, हर व्यक्ति एक या दूसरे तरीके से राजनीति से प्रेरित होता है। आधुनिक लोकतांत्रिक शासन का अर्थ केवल मतों का प्रयोग करके सरकार बनाना नहीं है, बल्कि नागरिकों की इच्छा के अनुसार निर्णय लेने के लिए जनहित में चुनी गई सरकार को बाध्य करना है। सत्ताधारी राजनीतिक दल आमतौर पर सामाजिक जरूरतों को पूरा करते हैं।

राजनीतिक दल और उनके साथ काम करने वाले राजनीतिक व्यक्तित्व, चाहे वे लोकतांत्रिक या अधिनायकवादी व्यवस्था में ही हों, राजनीति का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। व्यक्तित्व मनोविज्ञान में, किसी विशेष पार्टी के प्रति किस तरह के लोग आकर्षित होते हैं या शामिल होते हैं, इसका अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र मनोविज्ञान और व्यक्तित्व मनोविज्ञान के संदर्भ में किया जाएगा। इस विषय पर सबसे कम काम और शोध किया गया है।

भारत एक विकासशील देश है, यह भाषा, धर्म, जाति, पंथ आदि की विविधता के साथ दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। कुछ क्षेत्र औद्योगिक और आर्थिक रूप से विकसित हैं, कुछ अविकसित और पिछड़े हैं। कुछ क्षेत्र आदिवासियों के हैं और कुछ क्षेत्र जनजातियों के हैं, जिनकी समस्याएं अन्य क्षेत्रों से भिन्न हैं। इन सभी विविधताओं के कारण, लोगों की राजनीतिक इच्छाशक्ति समान नहीं है, न ही यह हो सकता है। यही कारण है कि भारत में कई प्रकार के राजनीतिक दल हैं और उनके व्यक्तित्व विशेषताओं वाले लोग उनका अनुसरण करते हैं।

राजनीतिक गतिशीलता

लोकतांत्रिक व्यवस्था और शासन का पालन करने के लिए लोगों को राजनीतिक गतिविधियों से अवगत कराना आवश्यक है। लोकसत्ता का अर्थ है,"लोगों द्वारा, लोगों के लिए, लोगों का शासन" स इसलिए शासन का संचालन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोगों द्वारा किया जाता है। प्रचलित लोकतांत्रिक पद्धति के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति जागरूक हो। अनुभवी शायरस (1988) ने राजनीतिक आंकड़ों के लिए 3 तत्वों के आधार परइसकी व्याख्या की–

1. वह सार्वजनिक दलों द्वारा अपनाई गई वैकल्पिक पदों की प्राप्ति और नीति–संबंधी कार्यों को भी करता है।
2. वह राजनीतिक दलों द्वारा अपनाए गए वैकल्पिक पदों की प्राप्ति और नीति–संबंधी कार्यों को भी करता है।
3. वह कुछ लोगों के आम और दर्शकों को पकड़ लेता है और उनकी राजनीतिक विचारधाराओं को दरकिनार कर राजनीतिक विकल्प बनाता है।

किन्नी (1984) के एक अध्ययन में पाया गया कि चुनाव के विभिन्न चरणों में बहुत कम व्यक्तियों / मतदाताओं के पास उच्च राजनीतिक जानकारी थी।

राजनीतिक दलों की सदस्यता–

किसी पार्टी में शामिल होने वाले व्यक्तियों से अपेक्षा की जाती है कि वे उस पार्टी के सिद्धांतों का पालन करें, जो सामान्य सिद्धांतवादी विचारों को प्रभावित करते हैं, इसलिए विभिन्न व्यक्तित्व और दृष्टिकोण विभिन्न दलों की सदस्यता लेने में सहायक होते हैं। ब्रिटिश अध्ययनों के आधार पर, वैली ग्रेड पेपर मर्गर वेकल (1985) ने समझाया कि यह महत्वपूर्ण नहीं है कि एक राजनीतिक सभा को कैसे स्वीकार किया जाता है, बल्कि यह भी कि कोई व्यक्ति किसी पार्टी की सदस्यता क्यों स्वीकार करता है? एक और क्यों नहीं?

भारत में राजनीतिक लगाव

भारत के लोगों के बीच राजनीतिक लगाव उच्चतम क्रम का नहीं है, क्योंकि मतदाता राजनीतिक दलों या उम्मीदवारों में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखते हैं, शायद इसलिए कि सभी दलों केआयातित उम्मीदवारों, आपराधिक छवि के उम्मीदवारों या धनशक्ति का प्रदर्शन हैं, जिसमें सभी सक्षम नहीं हैं मतदाताओं के लिए भावुक लगाव उत्पन्न करने वाले इन नेताओं की कमी होती जा रही ह , जैसा कि 60 के दशक तक राजनेताओं के साथ था। सीबी गेना (1994) ने अपने अध्ययनों में, राजनीतिक हस्तियों को 3 श्रेणियों में विभाजित किया है, जैसे कि दर्शक, ट्रान्सेंडैंटल और लड़ाकू, और एक मतदान व्यवहार के समय तेज दिखाई देते हैं।

भारतीय राजनीतिक दल

किसी पार्टी या पार्टी के संगठन में मुख्य रूप से दो भूमिकाएँ प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती हैं, पहली वे जो सदस्य हैं, दूसरी वे जो नेता हैं। एक नियंत्रण, दूसरा नियंत्रण, ये दोनों प्रकार की पार्टियां, दोनों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, सभी राजनीतिक दलों का समर्थन करने में लगी हुई हैं, जिन्हें मुख्य दलों के एक सहायक संगठन के रूप में समाज में स्वीकृति भी है। भारतीय राजनीतिक आंदोलन के मूल में अंग्रेजों के जमाने में सबसे ज्यादा राजनीतिक चेतना का आंदोलन था और इसका कारण आम जनता में अंग्रेजों द्वारा शिक्षा को बढ़ावा देना था। एक ऐसा संगठन जो राजनीतिक आंदोलन को सतह पर लाने में पूरी तरह सफल रहा, वह ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन था, जो 1851 में था, लेकिन – नामक पहला संगठन जो भारतीय राजनीति में दिखाई देता है,वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी है

उद्देश्य

व्यक्तिगत आधार एक सामान्य व्यक्ति इस विशाल राज्य प्रणाली के साथ खुद को असहाय पाता है। इसलिए, सामूहिक हितों और दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए लोग संगठित होते हैं। इस संगठन को पार्टी का नाम कहा जाता है। समाज में विभिन्न व्यक्तियों के

राजनीतिक व्यवहार में गतिशीलता है। लोकतांत्रिक युग में राजनीतिक दलों की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उनके सिद्धांतों और विचारधाराओं का पालन करने वालों के पक्ष में पार्टी का क्या संबंध है। रूचि – मानसिकता से घनिष्ठ संबंध है, राजनीति के प्रति रुचि विभिन्न प्रकार के संगठनों जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि के साथ विकसित होती है।

उपकरण

राजनीतिक जीवन प्रश्नावली, योग्यता पैमाने, व्यक्तित्व प्रश्नावली आदि का उपयोग किया जाता था। जिसे प्रयोग करता स्वयं निर्मित करेगा ।

परिणाम

दलों की ओर कार्यकर्ताओं की निष्ठा

कांग्रेस		भाजपा		सपा		बसपा		कम्युनिस्ट	
मीन	S.D	मीन	S.D	मीन	S.D	मीन	S.D	मीन	S.D
44.65	6.84	42.73	8.13	39.66	5.09	47.08	8.33	42.83	5.35

N=60

दलों की ओर पार्टियोंऔर व्यक्तियों का राजनीतिक रवैया

	कांग्रेस	भाजपा	सपा	बसपा	कम्युनिस्ट
मीन	60.5	69.75	41.04	39.16	47.07
एम.डी.	11.37	8.4	6.22	10.24	12.36

N=60

दल बदलु और उनके समर्थकों के बीच भावनात्मक समानता नहीं पाई गई। राजनीतिक दलों की निष्ठा की मात्रा का प्रभाव चुनाव के समय स्पष्ट है। एक पार्टी की संस्कृति दूसरी पार्टी की संस्कृति के बीच पर्याप्त अंतर दिखाती है। कॉर्डिया 1905 के अनुसार, देश की अधिकांश पार्टियां अपने नेताओं की निजी लिमिटेड कंपनियों की तरह हो गई हैं। बसपा और सपा समर्थकों की पार्टी निष्ठा सबसे कम थी, जबकि भाजपा की सर्वोच्च पार्टी निष्ठा पाई गई थी। इसका कारण सत्ताधारी पार्टी में भाजपा की भागीदारी हो सकती है।

व्याख्या

व्यक्तित्व एक व्यक्ति के गुणों की प्रवृत्ति है, जिसका ज्ञान व्यक्ति के व्यवहार से प्राप्त होता है, प्रत्येक व्यक्ति का एक अलग व्यक्तित्व होता है, जिसके द्वारा उसकी शक्ति को पहचाना जा सकता है। मिल्वैथ (1985) ने बताया कि जो व्यक्ति सामाजिक सुख और आत्मविश्वास का अनुभव करते हैं, वे अक्सर राजनीतिक आंदोलनों में भाग लेते हैं। इसके लिए व्यक्ति का सामाजिक सुख और आत्मविश्वास होना आवश्यक है। वर्तमान समय में, राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले लोगों को वर्तमान सामाजिक परिवेश से असंतुष्ट देखा जाता है। इससे प्रत्येक पार्टी के सदस्यों के व्यक्तित्व में एक मनोरोगी आयाम का उदय हुआ।

संदर्भः

अन्नपूर्णा गुप्ता (1961): – उच्च और निम्न राजनीतिक आकांक्षा अनुसंधान के
Udayan Sharma (1998) : Political Efficiency & BJP and Congress Kuber Publication
Kuldeep Nayyar (1997) : Crisis of Indian politics Swatantra Bharat prakashan

Narendra Mohan (1998) : Indian politics in the swamp of price inferiority Dainik Jagran Prakashan
CB Gaina (1982) : History of Indian Politics Kamal Prakashan
Premchand Tripathi (1982) : Political relations and personalities in the content of fellow students Research Thesis
Dr. Mahesh Chandra Sharma (1992) : Hindu Rashtra Lohiya and Socialism Ujala Prakashan
Basat Saadeh (2000) : Congress Pre and Post Independence Kamal Prakashan
Madhuliyame (1994) : Post Independence Politics in Rajkamal Prakashan